अशोक के फूल

गद्यांश- 1

(1) पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया उसके जीवन के अन्तिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती । फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अन्तर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **प्रस्तुत गद्यांश के लेखक व पाठ का नाम स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी जी हैं तथा पाठ का नाम 'अशोक के फूल' है ।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।**
   उत्तर- व्याख्या- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहता है कि जब भी वह पुष्पित अशोक अर्थात् अशोक के खिले हुए फूलों को देखता है, तो वह उदास हो जाता है । लेखक अपनी उदासी का कारण स्पष्ट करते हुए कहता है कि वह इसलिए उदास नहीं है कि अशोक के पुष्प अत्यधिक सुन्दर हैं या उनकी सुन्दरता से उसे कोई ईर्ष्या हो रही है और वह न ही उसकी कमियों का अन्वेषण कर उसे अभागा बताकर उससे सहानुभूति प्रदर्शित करने का प्रयास करते हुए स्वयं को उससे सुन्दर अथवा सर्वगुणसम्पन्न बताकर अपने मन को सुखी बना रहा है । यद्यपि संसार में सुन्दर वस्तुओं को दुर्भाग्यशाली या कम समय के लिए भाग्यवान समझकर ईर्ष्यावश उससे आनन्द की प्राप्ति करने वाले लोगों की कमी नहीं है ।
3. **प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने स्वयं के विषय में क्या कहा है?**
   उत्तर- लेखक ने स्वयं को अन्य लोगों से कम दूरदर्शी बताकर अपनी उदारता एवं महानता का परिचय दिया है। लेखक अशोक के फूल के सम्बन्ध में अपनी मनः स्थिति एवं सोच को स्पष्ट कर रहा है ।
4. **"वे बहुत दूरदर्शी होते हैं।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- 'वे बहुत दूरदर्शी होते हैं।' पंक्ति का आशय यह है कि कुछ लोग बहुत दूर तक देखने वाली गहन दृष्टि रखते हैं वे बहुत आगे तक विचार करते हैं । वे सामने वाले व्यक्ति के जीवन के अन्तिम मुहूर्त तक का हिसाब लगा लेते हैं।
5. **'हतभाग्य' तथा 'दूरदर्शी' शब्दों के अर्थ लिखिए।**
   उत्तर- **हतभाग्य-** भाग्यहीन, अभागा। **दूरदर्शी-** भविष्य की घटनाओं को समझने वाला।
6. **प्रस्तुत गद्यांश में लेखक क्या बताना चाहता है?**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक यह बताना चाहता है कि संसार में सुन्दर वस्तुओं दुर्भाग्यशाली या कम समय के लिए भाग्यवान समझकर ईर्ष्या के कारण उससे आनन्द की प्राप्ति करने वाले लोगों की कमी नहीं है।
7. **लेखक का मन क्यों उदास हो जाता है?**
   उत्तर- पुष्पित अशोक को देखकर लेखक का मन उदास हो जाता है।
8. **प्रस्तुत पाठ में किस शैली का प्रयोग किया है?**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने विवेचनात्मक, वर्णनात्मक एवं व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है।
9. **किस पुष्प को देखकर लेखक का मन उदास हो जाता है?**
   उत्तर- अशोक के खिले हुए पुष्प को देखकर लेखक का मन उदास हो जाता है।
10. **प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने स्वयं के विषय में क्या कहा है?**
    उत्तर- लेखक ने स्वयं को अन्य लोगों से कम दूरदर्शी बताकर अपनी उदारता एवं महानता का परिचय दिया है।

गद्यांश- (2)

अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुन्दरियों के आसिंजनकारी नूपुरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था, कोमल कपोलों पर कर्णावतंस के रूप में झूलता था और चंचल नील अलकों की अचंचल शोभा को सौ गुना बढ़ा देता था। वह महादेव के मन में क्षोभ पैदा करता था, मर्यादा पुरुषोत्तम के चित्त में सीता का भ्रम पैदा करता था और मनोजन्मा देवता के एक इशारे पर कन्धों पर से ही फूट उठता था।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **प्रस्तुत गद्यांश के लेखक व पाठ का नाम स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी जी हैं तथा पाठ का नाम 'अशोक के फूल' है।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।**
   उत्तर- उनका मानना था कि अशोक पर तभी पुष्प आते थे, जब कोई अत्यन्त सुन्दर युवती अपने कोमल और संगीतमय नूपुरवाले चरणों से उस पर प्रहार करती थी । अशोक के फूलों की सुन्दरता के कारण सुन्दरियाँ उन्हें अपने कानों का आभूषण बनाती थीं । यह कर्णफूल जब उनके सुन्दर गालों पर झूलता था तो उनकी सुन्दरता और भी अधिक बढ़ जाती थी । जब वे अशोक के फूलों को अपनी काली- नीली चोटी में गूंथती थीं, तो उनकी चंचल लटाओं की सुन्दरता सौ गुना बढ़ जाती थी और तब देखने वालों की दृष्टि उनसे हटती ही नहीं थी ।
3. **प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का उद्देश्य क्या है ?**

www.gyansindhuclasses.com

उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने अशोक के फूल का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। यहाँ लेखक कहना चाहता है कि साहित्यकारों में मुख्य रूप से संस्कृत के महान् कवि कालिदास ने अशोक के फूल का जो मादकतापूर्ण वर्णन किया है, ऐसा किसी अन्य ने नहीं किया है ।

4. **'अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था' पंक्ति का फूल आशय स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- 'अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था।' पंक्ति का आशय यह है कि कालिदास ने अपने साहित्य में अशोक के फूल को अत्यन्त सम्मान दिया । अशोक के फूल की मादकता का अनुभव करने की दृष्टि कालिदास के पास थी, ऐसा वर्णन अपूर्व (पहले किसी ने नहीं किया) था।
5. **निम्न शब्दों का शब्दार्थ लिखिए- आसिजनकारी तथा कर्णावतंस ।**
   उत्तर- आसिंजनकारी- अनुरागोत्पादक। कर्णावतंस- कर्णफूल।
6. **अशोक को तत्कालीन सामज में सम्मान किसने दिलाया?**
   उत्तर- अशोक को तत्कालीन सामज में सम्मान कालिदास ने दिलाया था।
7. **अशोक के प्रति महादेव का हृदय क्षोभ (क्रोध) से किस कारण भर गया था?**
   उत्तर- अशोक के कामोत्तेजक गुणों के कारण।
8. **प्रस्तुत गद्यांश में मनोजन्मा देवता किसे कहा गया है?**
   उत्तर- मनोजन्मा देवता कामदेव को कहा गया है।
9. **प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का क्या उद्देश्य है?**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का कहना है कि साहित्यकारों में मुख्य रूप से संस्कृत महान् कवि कालिदास ने अशोक के फूल का जो मादकतापूर्ण वर्णन किया है, ऐसा किसी अन्य रचनाकार ने नहीं किया है।
10. **किस फूल की सुन्दरता के कारण सुन्दरियाँ उन्हें अपने कानों का आभूषण बनाती है?**
    उत्तर- अशोक के फूलों की सुंदरता के कारण सुन्दरियाँ उन्हें अपने कानों का आभूषण बनाती हैं।
11. **संस्कृत के किस कवि ने अशोक को अपने साहित्य में स्थान दिया?**
    उत्तर- संस्कृत के कवि कालिदास ने अशोक को अपने साहित्य में स्थान दिया।
12. **गद्यांश की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।**
    उत्तर- भाषा प्रवाहपूर्ण संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।

गद्यांश- (3)

कहते हैं, दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है! केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा। क्यों उसे वह याद रखती? सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **प्रस्तुत गद्यांश के लेखक व पाठ का नाम स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी जी हैं तथा पाठ का नाम 'अशोक के फूल' है ।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- व्याख्या- आ० द्विवेदी जी कहते हैं कि यह संसार बड़ा ही स्वार्थी है। यह केवल उन्हीं बातों को याद रखता है, जिससे उसके स्वार्थ की सिद्धि होती है। जिन लोगों या वस्तुओं से उसका स्वार्थ नहीं सधता है, वह उन्हें शीघ्र ही भुला देता है। वह व्यर्थ में लोगों या वस्तुओं को याद करके बोझिल नहीं होता। समय की गति के साथ जो प्रासंगिक नहीं रह जाता, वह उन्हें भूलता जाता है ।
3. **प्रस्तुत गद्यांश में किस प्रसंग की चर्चा की गई है?**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में आचार्य द्विवेदी जी ने रचनाकारों अर्थात् साहित्यकारों द्वारा अशोक के फूल को भूल जाने की आलोचना की है ।
4. **लेखक ने गद्यांश में किस प्रकार के लोगों को स्वार्थी कहा है?**
   उत्तर- लेखक ने गद्यांश में उन रचनाकारों या साहित्यकारों को स्वार्थी कहा है जिन्होंने साहित्यकारों द्वारा 'अशोक के फूल' के भूल जाने की गलती की है। लेखक के अनुसार यह संसार बड़ा स्वार्थी है। यह केवल उन्हीं बातों को याद रखता है जिससे उसके स्वार्थ की सिद्धि होती है।
5. **"सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।" पंक्ति का क्या आशय है?**
   उत्तर- लेखक कहना चाहता है कि यह संसार स्वार्थी व्यक्तियों से भरा पड़ा है। यहाँ हर व्यक्ति अपने ही स्वार्थ को साधने में लगा हुआ है। उसे अपने ही स्वार्थ को सिद्ध करने से फुरसत नहीं है, तो वह अशोक के फूल की क्या परवाह करेगा, जो शायद उसके लिए किसी काम का नहीं है ।
6. **गद्यांश की भाषा शैली लिखिए।**
   उत्तर- भाषा सरल, सहज, बोधगम्य एवं साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। शैली व्याख्यात्मक एवं सूत्रात्मक है।
7. **अशोक को विस्मृत करने का आधार किसे माना गया है?**
   उत्तर- अशोक को विस्मृत करने का आधार स्वार्थवृत्ति को माना गया है।
8. **लेखक ने दुनिया का किस तरह का व्यवहार बताया है?**
   उत्तर- लेखक ने दुनिया के व्यवहार को इस तरह बताया है कि यह केवल उतना ही याद रखती है जितने से इसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है।
9. **स्वार्थ का अखाड़ा किसे कहा गया है?**

www.gyansindhuclasses.com
www.gyansindhuclasses.com

उत्तर- सारे संसार को स्वार्थ का अखाड़ा कहा गया है।

गद्यांश- (4)

मुझे मानव-जाति की दुर्दम-निर्मम धारा के हजारों वर्ष का रूप साफ दिखाई दे रहा है। मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। न जाने कितने धर्माचारों, विश्वासों, उत्सवों और व्रतों को धोती-बहाती सी जीवन-धारा आगे बढ़ी है। संघर्षों से मनुष्य ने नई शक्ति पाई है। हमारे सामने समाज का आज जो रूप है, वह न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है। देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति केवल बाद की बात है।

सब कुछ में मिलावट है, सब कुछ अविशुद्ध है। शुद्ध केवल मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा (जीने की इच्छा) है। वह गंगा की अबाधित- अनाहत धारा के समान सब कुछ को हजम करने के बाद भी पवित्र है । सभ्यता और संस्कृति का मोह क्षण-भर बाधा उपस्थित करता है, धर्माचार का संस्कार थोड़ी देर तक इस धारा से टक्कर लेता है, पर इस दुर्दम धारा में सब कुछ बह जाता है।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **प्रस्तुत गद्यांश के लेखक व पाठ का नाम स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के लेखक हजारीप्रसाद द्विवेदी जी हैं तथा पाठ का नाम 'अशोक के फूल' है।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- छल-छद्म से परिपूर्ण वर्तमान जीवन में व्यक्ति के आचरण और सभ्यता से लेकर दैनिक उपभोग तक की प्रत्येक वस्तु में किसी-न-किसी प्रकार की मिलावट अवश्य है। संसार में आज यदि कुछ अपने शुद्ध रूप में विद्यमान है तो वह है मनुष्य की प्रत्येक विषम परिस्थिति में भी जीवित रहने की इच्छा। वह इच्छा आज भी उतनी ही बलवती और आडम्बरहीन है, जितनी कि अपने आदिकाल में थी। यह इच्छा आज भी उसी प्रकार उतनी ही पवित्र है, जिस प्रकार गंगा की धारा अनादिकाल से अपने मार्ग की बाधाओं को समाप्त करके अपने पहले जैसे प्रवाह के साथ निरन्तर गतिशील है और पहले जितनी ही पवित्र है। सभ्यता और संस्कृति का मोह एवं धर्माचार संस्कार कुछ समय के लिए ही इससे टक्कर लेता है, किन्तु मनुष्य की इस दुर्दम जिजीविषा में सब कुछ बह जाता है।
3. **मानव जाति किस मोह को रौंदती चली आ रही है?**
   उत्तर- मनुष्य की जीवनी-शक्ति बड़ी निर्मम है, वह सभ्यता और संस्कृति के वृथा मोहों को रौंदती चली आ रही है। अब तक न जाने उसने कितनी जातियों एवं संस्कृतियों को अपने पीछे छोड़ दिया है।
4. **मानव का व्यवहार किस प्रकार परिवर्तित होता है?**
   उत्तर- मानव कभी भी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं रहता। अतः हमेशा ही उसके व्यवहार एवं संस्कृति में परिवर्तन होता रहता है। इसके लिए वह हमेशा प्रयत्नशील रहा है।
5. **"मनुष्य की जीवनी शक्ति बड़ी निर्मम है।" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- 'मनुष्य की जीवनी शक्ति बड़ी निर्मम है।' पंक्ति का आशय यह है कि व्यक्ति का अपने प्राणों से बहुत मोह होता है। वह सदैव अपने प्राणों की रक्षा के लिए प्रयास करता रहता है। यदि अपने प्राणों के लिए उसे किसी की हत्या भी करनी पड़े तो वह पीछे नहीं हटता, इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है तब उसे उचित-अनुचित का ध्यान भी नहीं रहता।
6. **मनुष्य की जीवन शक्ति कैसी है?**
   उत्तर- मनुष्य की जीवन शक्ति बड़ी निर्मम है, क्योंकि व्यक्ति का अपने प्राणों से मोह होता है। वह सदैव अपने प्राणों की रक्षा के लिए प्रयास करता रहता है। अपने प्राणों की रक्षा के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता है, यहाँ तक कि वह कितना भी घृणित, निर्मम और क्रूर कार्य भी कर सकता है।
7. **हमारे सामने आज समाज का स्वरूप कैसा है?**
   उत्तर- हमारे सामने समाज का जो रूप है, वह अनेक ग्रहण व त्याग का रूप है अर्थात् हमें अनेक संघर्षों से प्राप्त हुआ है। आपसी सामंजस्य वस्तुतः अनके परम्पराओं एवं मूल्यों के बीच समन्वय एवं सन्तुलन का परिणाम है। यह सामंजस्य कई संस्कृतियों की अनेक परम्पराओं एवं उनके मूल्यों को ग्रहण करके तथा अपनी परम्पराओं एवं मूल्यों को त्यागकर स्थापित हुआ है।
8. **लेखक ने मनुष्य की जिजीविषा को किस रूप में प्रस्तुत किया है ?**
   उत्तर- लेखक ने मनुष्य की जिजीविषा को विशुद्ध रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक का मानना है कि दुनिया की सारी चीजें मिलावट से पूर्ण हैं। कोई भी वस्तु अपने विशुद्ध रूप में उपलब्ध नहीं है। इसके पश्चात् केवल एक ही चीज विशुद्ध है और वह है मनुष्य की दुर्दम जिजीविषा।
9. **हमारे सामने आज समाज का स्वरूप कैसा है?**
   उत्तर- हमारे सामने आज के समाज का स्वरूप विभिन्न सभ्यता एवं संस्कृतियों के ग्रहण और त्याग का रूप है।
10. **मनुष्य ने नई शक्ति किससे पाई है?**
    उत्तर- मनुष्य ने संघर्ष से नवीन शक्ति को प्राप्त किया है।
11. **'धर्माचारों' और 'विश्वासों' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
    उत्तर- 'धर्माचारों' का अर्थ है- धार्मिक परम्परा तथा 'विश्वासों' का अर्थ है- निश्चित धारणा ।
12. **लेखक ने किसे बाद की बात बताया है ?**
    उत्तर- देश और जाति की विशुद्ध संस्कृति को बाद की बात बताया है।
13. **ग्रहण और त्याग का रूप क्या है?**

www.gyansindhuclasses.com
www.gyansindhuclasses.com

उत्तर- वर्तमान समाज का रूप न जाने कितने ग्रहण और त्याग का रूप है।

14. गद्यांश में प्रयुक्त भाषा और शैली लिखिए।

उत्तर- भाषा सरल, सहज एवं साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। शैली व्याख्यात्मक एवं सूत्रात्मक है।

15. अनाहत, जिजीविषा, अविशुद्ध, दुर्दम, निर्मम, विशुद्ध आदि शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर- अनाहत- जिस पर आघात न हुआ हो। **जिजीविषा-** जीने की इच्छा, **अविशुद्ध-** जो बिलकुल शुद्ध हो, **दुर्दम-** प्रबल, प्रचंड, **निर्मम-** ममतारहित, निष्ठुर, **विशुद्ध-** शुद्ध, खरा।

16. मनुष्य की जीवनी शक्ति किन-किन को समाप्त करती हुई आज इस स्थिति में पहुंची है?

उत्तर- मनुष्य की जीवनी शक्ति हजारों वर्ष पूर्व से लेकर न जाने कितनी जातियां और संस्कृतियों की धार्मिक परंपराओं रीतियों-नीतियों, विश्वसों एवं उत्सवों एवं व्रतों को समाप्त करती हुई आज इस स्थिति में पहुंची है।

17. संसार में आज भी अपने शुद्ध रूप में विद्यमान क्या है?

उत्तर- संसार में आज भी अपने शुद्ध रूप में यदि कुछ विद्यमान है तो वह है मनुष्य की प्रत्येक विषम परिस्थिति में जीवित रहने की इच्छा।

www.gyansindhuclasses.com

गद्यांश- (5)

अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अलंकारमय हो, परन्तु है वह उस विशाल सामंत सभ्यता की परिष्कृत रुचि का ही प्रतीक, जो साधारण प्रजा परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त के संसार- कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से जो समृद्ध हुई थी। वे सामन्त उखड़ गये, समाज ढह गए, और मदनोत्सव की धूमधाम भी मिट गयी। **सन्तान-कामिनियों को गन्धर्वो से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा-पीरों ने, भूत-भैरवों ने, काली-दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी। दुनिया अपने रास्ते चली गई, अशोक पीछे छूट गया।**

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सामन्त सभ्यता की परिष्कृत रुचि का प्रतीक कौन है?

उत्तर- सामन्त सभ्यता की परिष्कृत रुचि का प्रतीक 'अशोक का वृक्ष' है।

2. लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से कौन समृद्ध हुई थी?

उत्तर- लेखक के अनुसार लाखों-करोड़ों (व्यक्तियों) की उपेक्षा से सामंतवाद समृद्ध हुआ था।

3. आज उस सामंती सभ्यता की क्या स्थिति है?

उत्तर- लेखक के अनुसार आज उस सामंती सभ्यता की स्थिति यह है कि वे उखड़ गये हैं, उनका समाज ढह गया है और उनके विलासितापूर्ण जीवन की धूमधाम मिट गयी।

4. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या– लेखक का कहना है कि संसार का नियम है कि जो वस्तु अथवा परम्परा है, वह समय के साथ परिवर्तन होता ही है। कुछ समय पश्चात् उसके स्वरूप में आमूल-चूल परिवर्तन होकर वह एक भिन्न रूप में हमारे सामने होती है। यही बात संस्कृति के सन्दर्भ में भी होती है। यही कारण है कि कभी सम्राटों और सामन्तों ने जिस विलासी और चाटुकार संस्कृति को जन्म दिया था, वह मन को लुभानेवाली और व्यक्ति को उन्मत्त करने वाली संस्कृति धीरे-धीरे समाप्त हो गई।

5. पाठ का शीर्षक तथा लेखक का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर- पाठ के शीर्षक का नाम 'अशोक के फूल' तथा लेखक का नाम हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

6. अशोक का वृक्ष किसका प्रतीक है?

उत्तर- अशोक सामंत सभ्यता की परिष्कृत रुचि का प्रतीक था।

7. सामंत सभ्यता किसके आधार पर पली-बढ़ी?

उत्तर- सामन्त सभ्यता साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त के संसार-कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से समृद्ध हुई थी।

8. सन्तान-कामिनियों को किसका वरदान प्राप्त होने लगा?

उत्तर- सन्तान-कामिनियों को गंधर्वो से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा।

9. यक्षों की प्रतिष्ठा किसने घटा दी?

उत्तर- यक्षों की प्रतिष्ठा पीरों, भूत-भैरवों एवं काली दुर्गा ने घटा दी।

10. अशोक के वृक्ष की क्या विशेषताएँ हैं?

www.gyansindhuclasses.com

उत्तर- अशोक का वृक्ष मनोहर, रहस्यमय एवं अलंकारमय है।

11. सामन्त सभ्यता से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- सामन्त सभ्यता से तात्पर्य है- सामन्तों का शासन।

12. सन्तान कामिनियों को किसका शक्तिशाली वरदान मिलने लगा?

उत्तर- सन्तान कामिनियों को देवताओं का शक्तिशाली वरदान मिलने लगा।

13. गद्यांश में प्रयुक्त भाषा और शैली स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भाषा सरल, सहज विसयानुरूप खड़ी बोली है। शैली वर्णनात्मक है।

14. **कौन उखड़ और ढह गया है?**
उत्तर- सामन्तवादी व्यवस्था समाप्त हो चुकी है तथा ऐसी शोषक व्यवस्था पर आधारित समाज भी अब ढह गये हैं।

15. **अशोक के वृक्ष की क्या विशेषताएँ हैं?**
अशोक के वृक्ष की विशेषताएँ हैं कि वह मनोहर, रहस्यमय और अलंकारमय है।

16. **अशोक क्यों पीछे छूट गया?**
उत्तर- पीरों, भूत-भैरवों और काली-दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी और दुनिया अपने रास्ते चली गई; इससे अशोक पीछे छूट गया।

17. **'परिष्कृत' और 'समृद्ध' शब्द का अर्थ क्या है?**
उत्तर- **'परिष्कृत'** का अर्थ है- सजाया हुआ, संस्कार किया गया और **'समृद्ध'** का अर्थ है- फलता-फूलता हुआ।

18. **"अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो।" इस वाक्यांश में किस रहस्य की ओर संकेत किया गया है?**
उत्तर- वाक्यांश में इस रहस्य की ओर संकेत किया गया है कि अशोक के वृक्ष की पूजा इसलिए भी की जाती रही थी कि उसे सन्तान सम्बन्धी मनोकामना को पूर्ण करनेवाला भी माना जाता रहा था। सन्तान की कामना करनेवाली स्त्रियाँ अब अशोक के वृक्ष की शरण में जाकर उसकी पूजा नहीं करतीं।

www.gyansindhuclasses.com

19. **प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार सामन्त क्यों उखड़ गए?**
उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार सामन्त इसलिए उखड़ गए अथवा उनका अस्तित्व इसलिए समाप्त हो गया; क्योंकि वे जिन किसान, मजदूरों का खून चूसकर स्वयं को समृद्ध बनाते रहे, वे आम जनता के लोग, किसान और मजदूर समय के परिवर्तन के साथ ही अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गए।

गद्यांश- (7)

रवीन्द्रनाथ ने इस भारतवर्ष को महामानवसमुद्र कहा है। विचित्र देश है वह! असुर आए, आर्य आए, शक आए, हूण आए, नाग आए, यक्ष आए, गन्धर्व आए, न जाने कितनी मानव जातियाँ यहाँ आईं और आज के भारतवर्ष को बनाने में अपना हाथ लगा गईं। जिसे हम हिन्दू रीति-नीति कहते हैं 'वह अनेक आर्य और आर्येतर उपादानों का अद्भुत मिश्रण हैं।'

व्याख्या- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतवर्ष को महामानवों का समुद्र कहा है। यहाँ मानवता का पोषण करनेवाले महापुरुषों की एक लम्बी परम्परा है। हमारा यह देश बड़ा विचित्र है; क्योंकि यहाँ के कण-कण में विभिन्न संस्कृतियों का वैविध्य रचा-बसा है। इसका कारण यह है कि इसके निर्माण में असुरों से लेकर आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष और गन्धर्व जातियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारा इतिहास इन सब जातियों के दुनिया के अलग-अलग कोनों से आकर यहाँ बसने की पुष्टि करता है। इन सभी मानव जातियों ने अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुसार इस देश को सजाया सँवारा, जिसके समन्वित रूप को आज हिन्दू रीति-नीति के नाम से जाना जाता है।

1. **पाठ का शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखिए।**
उत्तर- **पाठ का शीर्षक**-अशोक के फूल । **लेखक का नाम-** आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ।

2. **रवीन्द्रनाथ ने किसे महामानवसमुद्र कहा है?**
उत्तर- रवीन्द्रनाथ ने भारतवर्ष को महामानवसमुद्र कहा है।

3. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
उत्तर- उपर्युक्त व्याख्या के अन्तर्गत मोटे अक्षरों में छपा व्याख्यांश देखिए ।

4. **भारतवर्ष के निर्माण में किन-किन का सहयोग रहा है?**
उत्तर- भारतवर्ष के निर्माण में असुर, आर्य, शक, हूण, नाग, यक्ष और गन्धर्व मानव-जातियों का सहयोग रहा है।

5. **आर्य, शक, हूण कहाँ आए?**
उत्तर- आर्य, शक और हूण विश्व के अलग-अलग भागों से भारत आए।

गद्यांश- (8)

भगवान् बुद्ध ने मार-विजय के बाद वैरागियों की पलटन खड़ी की थी। असल में 'मार' मदन का भी नामान्तर है। कैसा मधुर और मोहक साहित्य उन्होंने दिया। पर न जाने कब यक्षों के वज्रपाणि नामक देवता इस वैराग्यप्रवण धर्म में घुसे और बोधिसत्त्वों के शिरोमणि बन गए, फिर बज्रयान का अपूर्व धर्म-मार्ग प्रचलित हुआ। त्रिरत्नों में मदन देवता ने आसन पाया। वह एक अजीब आँधी थी। इसमें बौद्ध बह गए, शैव बह गए, शाक्त बह गए। उन दिनों 'श्रीसुन्दरीसाधनतत्पराणां योगश्च भोगश्च करस्थ एव' की महिमा प्रतिष्ठित हुई। काव्य और शिल्प के मोहक अशोक ने अभिचार में सहायता दी।

www.gyansindhuclasses.com

1. **भगवान् बुद्ध ने मार-विजय के बाद क्या किया?**
उत्तर- भगवान् बुद्ध ने मार-विजय के बाद समाज में वैरागियों की बड़ी फौज खड़ी की।

2. **बोधिसत्त्वों का शिरोमणि कौन बन गया?**
उत्तर- बोधिसत्त्वों का शिरोमणि यक्षों का देवता वज्रपाणि (इन्द्र) बन गया।

3. **'बोधिसत्त्व' और 'अभिसार' शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- 'बोधिसत्त्व' का अर्थ 'बुद्धत्व प्राप्त करनेवाला' और 'अभिचार' का अर्थ है 'बुरे कर्मों के लिए मन्त्र का प्रयोग करना'।

4. **'मार' शब्द किसका पर्यायवाची है?**

   उत्तर- 'मार' शब्द 'कामदेव' का पर्यायवाची है।

5. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर- उस समय धन और सुन्दरी की प्राप्ति को सर्वोच्च साधन माना गया। इन्हीं दोनों को योग और भोग के रूप में प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य बन गया। जिसने इन दोनों का जितना अधिक उपभोग किया, वह उतने प्रतिष्ठित सन्त के रूप में सम्मान पाने लगा। इस कुत्सित वातावरण से काव्य और कला का मोहक प्रतीक अशोक भी अछूता न रहा। उसने भी दोहद कर्म के रूप में समाज में व्यभिचार (बुरे कर्मों) को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभायी।

6. **उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।**

   उत्तर- **पाठ का शीर्षक-** अशोक के फूल। **लेखक-** आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

7. **'श्रीसुन्दरीसाधनतत्पराणां योगश्च भोगश्च करस्थ एव।' पंक्तियों का क्या आशय है?**

   उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है कि योग और भोग उन लोगों के हाथ में हैं जो श्री सुन्दरी के साधनों के प्रति समर्पित हैं।

www.gyansindhuclasses.com

गद्यांश- (9)

मगर उदास होना भी बेकार है। अशोक आज भी उसी मौज में है, जिसमें आज से दो हजार वर्ष पहले था। कहीं भी तो कुछ नहीं बिगड़ा है, कुछ भी तो नहीं बदला है। बदली है मनुष्य की मनोवृत्ति। यदि बदले बिना वह आगे बढ़ सकती तो शायद वह भी नहीं बदलती। और यदि वह न बदलती और व्यावसायिक संघर्ष आरम्भ हो जाता-मशीन का रथ घर्घर चल पड़ता- विज्ञान का सावेग धावन चल निकलता तो बड़ा बुरा होता।

1. **लेखक के अनुसार किसमें परिवर्तन हुआ है?**

   उत्तर- लेखक के अनुसार मनुष्य की मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ है।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- द्विवेदी जी मनुष्य की मनोवृत्ति में परिवर्तन को अनिवार्य मानते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि अशोक का काम तो बिना बदले चल गया, किन्तु मनुष्य का काम इससे नहीं चल सकता। यदि मनुष्य का काम भी बिना बदले चल सकता तो उसकी मनोवृत्ति कभी परिवर्तित न होती और आज भी मनुष्य सदियों 'पुराना जंगली आदिमानव ही होता। यदि आदिमानव के बाद की व्यावसायिक परिस्थिति में मनुष्य का जीवन स्थिर हो जाता तो आज उसमें भयंकर व्यावसायिक संघर्ष होता। यदि इसके बाद विज्ञान का मशीनी रथ अपने पूर्ण घर्घर नाद के साथ अपनी पूरी गति से दौड़ने लगता तो आज बड़ी विकट समस्या उत्पन्न हो जाती। लोगों के हाथों का रोजगार छिन जाता, केवल मुट्ठीभर लोग, जो मशीनों के संचालन में कुशल होते, सर्वसम्पन्न होते और शेष सम्पूर्ण समाज दीन-हीन अवस्था में होता।

3. **'मनोवृत्ति' और 'धावन' शब्दों का आशय लिखिए।**

   उत्तर- 'मनोवृत्ति' का आशय मन की भावनाओं और आदतों से है। 'धावन' का आशय दौड़ से है।

4. **अशोक आज भी उसी मौज में क्यों है?**

   उत्तर- अशोक आज भी उसी मस्ती में है; क्योंकि उसने उदास होना नहीं सीखा और अपनी मनोवृत्तियों को भी उसने नहीं बदला है।

5. **उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और उसके लेखक का नाम लिखिए।**

   उत्तर- पाठ का शीर्षक- अशोक के फूल। लेखक का नाम-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

गद्यांश- (10)

अशोक वृक्ष की पूजा इन्हीं गंधर्वों और यक्षों की देन है। प्राचीन साहित्य में इस वृक्ष की पूजा के उत्सवों का बड़ा सरस वर्णन मिलता है। असल पूजा अशोक की नहीं, बल्कि उसके अधिष्ठाता कंदर्प देवता की होती थी। इसे 'मदनोत्सव' कहते थे। महाराज भोज के 'सरस्वती-कंठाभरण' से जान पड़ता है कि यह उत्सव त्रयोदशी के दिन होता था। 'मालविकाग्निमित्र' और 'रत्नावली' में इस उत्सव का बड़ा सरस, मनोहर वर्णन मिलता है। मैं जब अशोक के लाल स्तवकों को देखता हूँ तो मुझे वह पुराना वातावरण प्रत्यक्ष दिखाई दे जाता है। राजघरानों में साधारणतः रानी ही अपने सनूपुर चरणों के आघात से इस रहस्यमय वृक्ष को पुष्पित किया करती थीं। कभी-कभी रानी अपने स्थान पर किसी अन्य सुंदरी को नियुक्त कर दिया करती थीं।

1. **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**

   उत्तर- **सन्दर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' द्वारा लिखित 'अशोक के फूल' नामक निबन्ध से उद्धृत है।

2. **अशोक वृक्ष की पूजा किसकी देन है?**

   उत्तर- अशोक वृक्ष की पूजा गन्धर्वों और यक्षों की देन है।

www.gyansindhuclasses.com

3. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- द्विवेदी जी कहते हैं कि अशोक के वृक्ष की पूजा का प्रचलन गन्धर्वों एवं यक्षों द्वारा किया गया। इस उत्सव में अशोक वृक्ष के अधिष्ठाता देवता कामदेव की पूजा की जाती थी। इसीलिए इस उत्सव को 'मदनोत्सव' कहा जाता था।

4. **अशोक वृक्ष को कौन पुष्पित किया करती थीं?**

   उत्तर- राजघरानों में रानी अपने चरणों के आघात से अशोक वृक्ष को पुष्पित किया करती थीं।

5. **लेखक को पुराना वातावरण कब प्रत्यक्ष दिखाई देता है?**

उत्तर- लेखक जब अशोक के लाल स्तवकों को देखता है तो उसे वह पुराना वातावरण प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

6. **'अधिष्ठाता' और 'स्तवक' शब्दों का अर्थ लिखिए।**

उत्तर- 'अधिष्ठाता' का अर्थ 'अध्यक्ष, नियामक, मुखिया, प्रधान, ईश्वर' है और 'स्तवक' का अर्थ 'गुच्छा' है।

7. **महाराज भोज के 'सरस्वती-कंठाभरण' से क्या जानकारी मिलती है?**

उत्तर- महाराज भोज के 'सरस्वती-कंठाभरण' से जानकारी मिलती है कि यह उत्सव त्रयोदशी के दिन होता था।

www.gyansindhuclasses.com

www.gyansindhuclasses.com